

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजी०) चेन्नई

ज्योतिष प्रवीण परीक्षा : जून-2009

प्रश्न पत्र-I

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

कोई भी पाँच प्रश्न हल करें। प्रश्न 1 तथा 6 अनिवार्य हैं। दोनों भागों में से कम से कम एक-एक प्रश्न का चयन करते हुए तीन अन्य प्रश्नों के उत्तर दें। सब प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I (साधारण ज्योतिष)

1. रिक्त स्थान भरें :-

- i ----- उत्तर कालामृत के लेखक हैं।
- ii कल्याण वर्मा की कृति का नाम ----- है।
- iiii जन्म पत्रिका में यह स्थान अर्थ स्थान कहलाते हैं -----।
- iv संपात प्रति वर्ष ----- अंश से सरकता है।
- v ----- कर्म दृढ़, अदृढ़ व दृढ़ादृढ़ कर्म में विभाजित होते हैं।
- vi खगोलिय ज्योतिष ----- स्कन्ध की एक शाखा है।
- vii संचित कर्म ----- के नाम से जाने जाते हैं।
- viii कर्म विपाका में ----- की चर्चा है।
- xi शिक्षा एक ----- का भाग है।
- x ----- कर्म जातक इस जन्म में भोगता है।

2. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

- क) श्रुति व स्मृति
- ख) ज्योतिष शास्त्र की किन्हीं दो काल निर्धारण की तकनीकों के नाम लिखें।
- ग) संहिता
- घ) शकुन

3. एक अच्छे ज्योतिषी होने की योग्यता की व्याख्या कीजिए।

4. कर्मों की विभिन्न श्रेणियों के बारे में बताइये।

5. ज्योतिष क्यों पढ़ना चाहिए? इसके क्या उपयोग हैं?

भाग-II (ज्योतिष से सम्बन्धित खगोल शास्त्र)

6. कब व कैसे ग्रह वक्री होते हैं? चित्र द्वारा समझाएं।

अथवा

चन्द्रमा की विभिन्न कलाओं पर चर्चा करें।

7. किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

- | | |
|------------------|--------------|
| क. भचक्र | ख. संपात |
| ग. आकाशीय विषुवत | घ. सायन अवधि |
| च. क्रांति वृत्त | |

8. सूर्य ग्रहण कितने प्रकार का होता है? सूर्य ग्रहण का चित्र बनाएं।

9. किन्हीं दो को समझाएं :-

- | | | |
|-----------|----------------------|-----------------|
| क. अयनांश | ख. ग्रह का अस्त होना | ग. ऋतु परिवर्तन |
|-----------|----------------------|-----------------|

10. पंचांग पर विस्तार से चर्चा करें।